حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَیْءٍ ۪ وَّ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۹۱﴾ۙ وَ اَنْ

हुरमत वाला किया है[160] और सब कुछ उसी का है और मुझे हुक्म हुवा है कि फ़रमां बरदारों में होउं और येह कि

اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا یَهْتَدِیْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ

कुरआन की तिलावत करूं[161] तो जिस ने राह पाई उस ने अपने भले को राह पाई[162] और जो बहके[163]

فَقُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِیْنَ ﴿۹۲﴾ وَ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَیُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ

तो फ़रमा दो कि मैं तो येही डर सुनाने वाला हूं[164] और फ़रमाओ कि सब ख़ूबियां अल्लाह के लिये हैं अ़न्क़रीब वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाएगा

فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ وَ مَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ ع ۹

तो उन्हें पहचान लोगे[165] और ऐ महबूब तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं ऐ लोगो तुम्हारे आ'माल से

اٰیاتها ۸۸ | ۲۸ سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ ۴۹ | رکوعاتها ۹

सूरए क़सस मक्किय्या है, इस में अठासी आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

طٰسٓمٓ ﴿۱﴾ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ﴿۲﴾ نَتْلُوْا عَلَیْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى

येह आयतें हैं रोशन किताब की[2] हम तुम पर पढ़ें मूसा

وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۳﴾ اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِی الْاَرْضِ وَ

और फ़िरऔ़न की सच्ची ख़बर उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं बेशक फ़िरऔ़न ने ज़मीन में ग़लबा पाया था[3] और

جَعَلَ اَهْلَهَا شِیَعًا یَّسْتَضْعِفُ طَآىِٕفَةً مِّنْهُمْ یُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَ

उस (ज़मीन) के लोगों को अपना ताबेअ़ बना लिया उन में एक गुरोह को[4] कमज़ोर देखता उन के बेटों को ज़ब्ह करता और

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का वत्न और वह्य का जाए नुज़ूल है। **160 :** कि वहां न किसी इन्सान का ख़ून बहाया जाए न कोई शिकार मारा जाए न वहां की घांस काटी जाए। **161 :** मख़्लूक़े ख़ुदा को ईमान की दा'वत देने के लिये। **162 :** उस का नफ़्अ़ व सवाब वोह पाएगा **163 :** और रसूले ख़ुदा की इताअ़त न करे और ईमान न लाए **164 :** मेरे ज़िम्मे पहुंचा देना था वोह मैं ने अन्जाम दिया (هٰذِهٖ اٰيَةٌ نَسَخَتْهَا اٰيَةُ الْقِتَال) **165 :** इन निशानियों से मुराद शक़्क़े क़मर वग़ैरा मो'जिज़ात हैं और वोह उ़क़ूबतें जो दुन्या में आईं जैसे कि बद्र में कुफ़्फ़ार का क़त्ल होना, क़ैद होना, मलाएका का उन्हें मारना। **1 :** सूरए क़सस मक्किय्या है सिवाए चार आयतों के जो "اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ" से शुरूअ़ हो कर "لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِيْنَ" पर ख़त्म होती हैं, और इस सूरत में एक आयत "اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ" ऐसी है जो मक्कए मुकर्रमा और मदीनए तय्यिबा के दरमियान नाज़िल हुई। इस सूरत में नव 9 रुकूअ़ अठासी 88 आयतें और चार सो इक्तालीस 441 कलिमे और पांच हज़ार आठ सो 5800 हर्फ़ हैं। **2 :** जो हक़ को बातिल से मुमताज़ करती है। **3 :** या'नी सर ज़मीने मिस्र में उस का तसल्लुत था और वोह ज़ुल्मो तकब्बुर में इन्तिहा को पहुंच गया था, हत्ता कि उस ने अपनी अ़ब्दिय्यत और बन्दा होना भी भुला दिया था। **4 :** या'नी बनी इसराईल को।

www.dawateislami.net

يَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٤ وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى

उन की औरतों को ज़िन्दा रखता[5] बेशक वोह फ़सादी था और हम चाहते थे कि उन कमज़ोरों

الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ

पर एहसान फ़रमाएं और उन को पेश्वा बनाएं[6] और उन के मुल्क व माल का उन्हीं

الْوٰرِثِيْنَ ۝٥ وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَنُرِىَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَ

को वारिस बनाएं[7] और उन्हें[8] ज़मीन में क़ब्ज़ा दें और फ़िरऔन और हामान और उन के लश्करों

جُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝٦ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ

को वोही दिखा दें जिस का उन्हें इन की तरफ़ से ख़तरा है[9] और हम ने मूसा की मां को इल्हाम फ़रमाया[10] कि

اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَلَا تَخَافِىْ وَلَا تَحْزَنِىْ ۚ

उसे दूध पिला[11] फिर जब तुझे उस से अन्देशा हो[12] तो उसे दरिया में डाल दे और न डर[13] और न ग़म कर[14]

اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧ فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ

बेशक हम उसे तेरी तरफ़ फेर लाएंगे और उसे रसूल बनाएंगे[15] तो उसे उठा लिया फ़िरऔन के

فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا

घर वालों ने[16] कि वोह उन का दुश्मन और उन पर ग़म हो[17] बेशक फ़िरऔन और हामान[18] और उन के लश्कर

5 : या'नी लड़कियों को ख़िदमत गारी के लिये ज़िन्दा छोड़ देता और बेटों को ज़ब्ह करने का सबब येह था कि काहिनों ने उस से कह दिया था कि बनी इसराईल में एक बच्चा पैदा होगा जो तेरे मुल्क के ज़वाल का बाइस होगा, इस लिये वोह ऐसा करता था और येह उस की निहायत हमाक़त थी क्यूं कि वोह अगर अपने ख़याल में काहिनों को सच्चा समझता था तो येह बात होनी ही थी, लड़कों के क़त्ल कर देने से क्या नतीजा था और अगर सच्चा नहीं जानता था तो ऐसी लग़्व बात का क्या लिहाज़ था और क़त्ल करना क्या मा'ना रखता था। **6 :** कि वोह लोगों को नेकी की राह बताएं और लोग नेकी में उन की इक़्तिदा करें **7 :** या'नी फ़िरऔन और उस की क़ौम के अम्लाक व अम्वाल उन ज़ईफ़ बनी इसराईल को दे दें **8 :** मिस्र और शाम की **9 :** कि बनी इसराईल के एक फ़रज़न्द के हाथ से उन के मुल्क का ज़वाल और उन का हलाक हो। **10 :** हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम यूहानिज़ है, आप लावा बिन या'कूब की नस्ल से हैं, अल्लाह तआला ने उन को ख़्वाब के या फ़िरिश्ते के ज़रीए या उन के दिल में डाल कर इल्हाम फ़रमाया **11 :** चुनान्चे वोह चन्द रोज़ आप को दूध पिलाती रहीं, इस अ़र्से में न आप रोते थे न उन की गोद में कोई हरकत करते थे, न आप की हमशीरा के सिवा और किसी को आप की विलादत की इत्तिलाअ़ थी। **12 :** कि हमसाया वाक़िफ़ हो गए हैं वोह ग़म्माज़ी और चुग़ुल ख़ोरी करेंगे और फ़िरऔन इस फ़रज़न्दे अरजुमन्द के क़त्ल के दरपै हो जाएगा **13 :** या'नी नीले मिस्र में बे ख़ौफ़ो ख़तर डाल दे और इस के ग़र्क़ व हलाक का अन्देशा न कर। **14 :** उस की जुदाई का **15 :** तो उन्हों ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को तीन माह दूध पिलाया और जब आप को फ़िरऔन की तरफ़ से अन्देशा हुवा तो एक सन्दूक़ में रख कर (जो ख़ास तौर पर इस मक़्सद के लिये बनाया गया था) शब के वक़्त दरियाए नील में बहा दिया **16 :** उस शब की सुब्ह को और उस सन्दूक़ को फ़िरऔन के सामने रखा और वोह खोला गया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बरआमद हुए जो अपने अंगूठे से दूध चूसते थे। **17 :** आख़िर कार **18 :** जो उस का वज़ीर था।

www.dawateislami.net

كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ﴿۸﴾ وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ؕ لَا

ख़ताकार थे[19] और फ़िरऔन की बीबी ने कहा[20] येह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठन्डक है इसे

تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۹﴾ وَ

क़त्ल न करो शायद येह हमें नफ़्अ़ दे या हम इसे बेटा बना लें[21] और वोह बे ख़बर थे[22] और

اَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَاۤ اَنْ رَّبَطْنَا

सुब्ह़ को मूसा की मां का दिल बे सब्र हो गया[23] ज़रूर क़रीब था कि वोह उस का ह़ाल खोल देती[24] अगर हम न ढारस

عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۚ فَبَصُرَتْ

बंधाते उस के दिल पर कि उसे हमारे वा'दे पर यक़ीन रहे[25] और (उस की मां ने) उस की बहन से कहा[26] उस के पीछे चली जा तो वोह उसे

بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ

दूर से देखती रही और उन को ख़बर न थी[27] और हम ने पहले ही सब दाइयां उस पर ह़राम कर दी थीं[28]

فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰۤى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ﴿۱۲﴾

तो बोली क्या मैं तुम्हें बता दूं ऐसे घर वाले कि तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें और वोह इस के ख़ैर ख़्वाह हैं[29]

فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

तो हम ने उसे उस की मां की त़रफ़ फेरा कि मां की आंख ठन्डी हो और ग़म न खाए और जान ले कि अल्लाह का वा'दा

19 : या'नी ना फ़रमान, तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें येह सज़ा दी कि उन के हलाक करने वाले दुश्मन की उन्हीं से परवरिश कराई। 20 : जब कि फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम के लोगों के वर्ग़लाने से मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़त्ल का इरादा किया। 21 : क्यूं कि येह इसी क़ाबिल है। फ़िरऔ़न की बीबी आसिया बहुत नेक बीबी थीं, अम्बिया की नस्ल से थीं, ग़रीबों और मिस्कीनों पर रह़मो करम करती थीं। उन्हों ने फ़िरऔ़न से कहा कि येह बच्चा साल भर से ज़ियादा उ़म्र का मा'लूम होता है और तू ने इस साल के अन्दर पैदा होने वाले बच्चों के क़त्ल का हुक्म दिया है, इलावा बरीं मा'लूम नहीं येह बच्चा दरिया में किस सर ज़मीन से आया, तुझे जिस बच्चे का अन्देशा है वोह इसी मुल्क के बनी इसराईल से बताया गया है। आसिया की येह बात उन लोगों ने मान ली 22 : उस से जो अन्जाम होने वाला था। 23 : जब उन्हों ने सुना कि उन के फ़रज़न्द फ़िरऔ़न के हाथ में पहुंच गए। 24 : और जोशे मह़ब्बते मादरी में "وَابِنَاهُ وَابِنَاهُ" (हाए बेटे हाए बेटे) पुकार उठतीं 25 : जो वा'दा हम कर चुके हैं कि तेरे इस फ़रज़न्द को तेरी त़रफ़ फेर लाएंगे। 26 : जिन का नाम मरयम था कि ह़ाल मा'लूम करने के लिये 27 : कि येह इस बच्चे की बहन है और इस की निगरानी करती है। 28 : चुनान्चे जिस क़दर दाइयां ह़ाज़िर की गईं उन में से किसी की छाती आप ने मुंह में न ली। इस से उन लोगों को बहुत फ़िक्र हुई कि कहीं कोई ऐसी दाई मुयस्सर आए जिस का दूध आप पी लें। दाइयों के साथ आप की हमशीरा भी येह ह़ाल देखने चली गई थीं। अब उन्हों ने मौक़अ़ पाया 29 : चुनान्चे वोह उन की ख़्वाहिश पर अपनी वालिदा को बुला लाईं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام फ़िरऔ़न की गोद में थे और दूध के लिये रोते थे, फ़िरऔ़न आप को शफ़क़त के साथ बहलाता था। जब आप की वालिदा आईं और आप ने उन की ख़ुश्बू पाई तो आप को क़रार आया और आप ने उन का दूध मुंह में लिया। फ़िरऔ़न ने कहा तू इस बच्चे की कौन है कि इस ने तेरे सिवा किसी के दूध को मुंह भी न लगाया ? उन्हों ने कहा मैं एक औ़रत हूं पाक साफ़ रहती हूं, मेरा दूध ख़ुश गवार है जिस्म ख़ुश्बूदार है इस लिये जिन बच्चों के मिज़ाज में नफ़ासत होती है, वोह और औ़रतों का दूध नहीं लेते हैं, मेरा दूध पी लेते हैं। फ़िरऔ़न ने बच्चा उन्हें दिया और दूध पिलाने पर उन्हें मुक़र्रर कर के फ़रज़न्द को अपने घर ले जाने की इजाज़त दी चुनान्चे आप अपने मकान पर ले आईं और अल्लाह

www.dawateislami.net

ع حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَ لَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَ اسْتَوٰۤى

सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते[30] और जब अपनी जवानी को पहुंचा और पूरे ज़ोर पर आया[31]

اٰتَیْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۴﴾ وَ دَخَلَ

हम ने उसे हुक्म और इल्म अता फ़रमाया[32] और हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को और उस शहर में

الْمَدِیْنَةَ عَلٰى حِیْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِیْهَا رَجُلَیْنِ

दाखिल हुवा[33] जिस वक़्त शहर वाले दोपहर के ख़्वाब में बे ख़बर थे[34] तो उस में दो मर्द

یَقْتَتِلٰنِ ۗ هٰذَا مِنْ شِیْعَتِهٖ وَ هٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِیْ

लड़ते पाए एक मूसा के गुरौह से था[35] और दूसरा उस के दुश्मनों से[36] तो वोह जो उस के गुरौह से था[37] उस ने मूसा से मदद

مِنْ شِیْعَتِهٖ عَلَى الَّذِیْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَیْهِ ۗ قَالَ

मांगी उस पर जो उस के दुश्मनों से था तो मूसा ने उस के घूंसा मारा[38] तो उस का काम तमाम कर दिया[39] कहा

هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّیْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۱۵﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّیْ

येह काम शैतान की तरफ़ से हुवा[40] बेशक वोह दुश्मन है खुला गुमराह करने वाला अर्ज़ की ऐ मेरे रब मैं ने

ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۶﴾ قَالَ

अपनी जान पर ज़ियादती की[41] तो मुझे बख़्श दे तो रब ने उसे बख़्श दिया बेशक वोही बख़्शने वाला मेहरबान है अर्ज़ की

तआला का वा'दा पूरा हुवा, उस वक़्त उन्हें इत्मीनाने कामिल हो गया कि येह फ़रज़न्दे अरजुमन्द ज़रूर नबी होंगे। **अल्लाह** तआला इस वा'दे का ज़िक्र फ़रमाता है। **30 :** और शक में रहते हैं। हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام अपनी वालिदा के पास दूध पीने के ज़माने तक रहे और इस ज़माने में फ़िरऔन उन्हें एक अशरफ़ी रोज़ देता रहा, दूध छूटने के बा'द आप हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को फ़िरऔन के पास ले आईं और आप वहां परवरिश पाते रहे। **31 :** उम्र शरीफ़ तीस साल से ज़ियादा हो गई। **32 :** या'नी मसालेहे दीन व दुन्या का इल्म। **33 :** वोह शहर या तो "मन्फ़" था जो हुदूदे मिस्र में है, अस्ल इस की माफ़ह है ज़बान क़िब्ती में इस लफ़्ज़ के मा'ना हैं तीस[30]। येह पहला शहर है जो तूफ़ाने हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام के बा'द आबाद हुवा, इस सर ज़मीन में मिस्र बिन हाम ने इक़ामत की, येह इक़ामत करने वाले कुल तीस[30] थे, इस लिये इस का नाम माफ़ह हुवा, फिर इस की अ़रबी मन्फ़ हुई। या वोह शहर "हाबीन" था जो मिस्र से दो फ़रसंग के फ़ासिले पर था। एक क़ौल येह भी है कि वोह शहर "ऐने शम्स" था। (جمل وخازن) **34 :** और हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के पोशीदा तौर पर दाख़िल होने का सबब येह था कि जब हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام जवान हुए तो आप ने हक़ का बयान और फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की गुमराही का रद शुरूअ़ किया। बनी इसराईल के लोग आप की बात सुनते और आप का इत्तिबाअ़ करते, आप फ़िरऔनियों के दीन की मुख़ालफ़त फ़रमाते। शुदा शुदा (रफ़्ता रफ़्ता) इस का चरचा हुवा और फ़िरऔनी जुस्तजू में हुए, इस लिये आप जिस बस्ती में दाख़िल होते ऐसे वक़्त दाख़िल होते जब वहां के लोग ग़फ़्लत में हों। हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि वोह दिन ईद का था, लोग अपने लहवो लअ़ब में मश्ग़ूल थे। (مدارک وخازن) **35 :** बनी इसराईल में से **36 :** या'नी क़िब्ती क़ौमे फ़िरऔन से, येह इसराईली पर जब्र कर रहा था ताकि इस पर लकड़ियों का अम्बार लाद कर फ़िरऔन के मत़्बख़ में ले जाए **37 :** या'नी हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के **38 :** पहले आप ने क़िब्ती से कहा कि इसराईली पर ज़ुल्म न कर इस को छोड़ दे लेकिन वोह बाज़ न आया और बद ज़बानी करने लगा तो हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उस को इस ज़ुल्म से रोकने के लिये घूंसा मारा **39 :** या'नी वोह मर गया और आप ने उस को रेत में दफ़्न कर दिया, आप का इरादा क़त्ल करने का न था। **40 :** या'नी उस क़िब्ती का इसराईली पर ज़ुल्म करना जो उस की हलाकत का बाइस हुवा। (خازن) **41 :** येह कलाम हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का ब तरीक़े तवाज़ोअ़ है क्यूं कि आप से कोई मा'सियत

www.dawateislami.net

رَبِّ بِمَآ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِیْرًا لِّلْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۷﴾ فَاَصْبَحَ فِی

ऐ मेरे रब जैसा तू ने मुझ पर एह़सान किया तो अब[42] हरगिज़ मैं मुजरिमों का मददगार न होउंगा तो सुब्ह़ की

الْمَدِیْنَةِ خَآىٕفًا یَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِی اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ یَسْتَصْرِخُهٗ ؕ

उस शह्‌र में डरते हुए इस इन्तिज़ार में कि क्या होता है[43] जभी देखा कि वोह जिस ने कल इन से मदद चाही थी फ़रियाद कर रहा है[44]

قَالَ لَهٗ مُوْسٰۤى اِنَّكَ لَغَوِیٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۱۸﴾ فَلَمَّاۤ اَنْ اَرَادَ اَنْ یَّبْطِشَ

मूसा ने उस से फ़रमाया बेशक तू खुला गुमराह है[45] तो जब मूसा ने चाहा कि उस पर गिरिफ़्त करे

بِالَّذِیْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ یٰمُوْسٰۤى اَتُرِیْدُ اَنْ تَقْتُلَنِیْ كَمَا قَتَلْتَ

जो उन दोनों का दुश्मन है[46] वोह बोला ऐ मूसा क्या तुम मुझे वैसा ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा तुम ने कल

نَفْسًۢا بِالْاَمْسِ ۖۗ اِنْ تُرِیْدُ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِی الْاَرْضِ وَ مَا

एक शख़्स को क़त्ल कर दिया तुम तो येही चाहते हो कि ज़मीन में सख़्त गीर बनो और

تُرِیْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِیْنَ ﴿۱۹﴾ وَ جَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِیْنَةِ

इस्लाह़ करना नहीं चाहते[47] और शह्‌र के परले कनारे से एक शख़्स[48]

یَسْعٰی ۫ قَالَ یٰمُوْسٰۤى اِنَّ الْمَلَاَ یَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِیَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّیْ

दौड़ता आया कहा ऐ मूसा ! बेशक[49] दरबार वाले आप के क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं तो निकल जाइये[50] मैं

सरज़द नहीं हुई, और अम्बिया मा'सूम हैं इन से गुनाह नहीं होते। क़िब्त़ी का मारना आप का दफ़्ए ज़ुल्म और इमदादे मज़्लूम थी, येह किसी मिल्लत में भी गुनाह नहीं, फिर भी अपनी त़रफ़ तक़्सीर की निस्बत करना और इस्तिग़्फ़ार चाहना येह मुक़र्रबीन (अल्लाह वालों) का दस्तूर ही है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि इस में ताख़ीर औला थी इस लिये ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने तर्के औला को ज़ियादती फ़रमाया और इस पर ह़क़ तआ़ला से मग़्फ़िरत त़लब की। **42 :** येह करम भी कर कि मुझे फ़िरऔ़न की सोह़बत और इस के यहां रहने से भी बचा कि इस ज़ुमरे में शुमार किया जाना येह भी एक त़रह़ का मददगार होना है। **43 :** कि ख़ुदा जाने उस क़िब्त़ी के मारे जाने का क्या नतीजा निकले और उस की क़ौम के लोग क्या करें। **44 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि फ़िरऔ़न की क़ौम के लोगों ने फ़िरऔ़न को इत्तिलाअ़ दी कि किसी बनी इसराईल ने हमारे एक आदमी को मार डाला है। इस पर फ़िरऔ़न ने कहा कि क़ातिल और गवाहों को तलाश करो। फ़िरऔ़नी गश्त करते फिरते थे और उन्हें कोई सुबूत नहीं मिलता था, दूसरे रोज़ जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ पेश आया कि वोही बनी इसराईल जिस ने एक रोज़ पहले इन से मदद चाही थी आज फिर एक फ़िरऔ़नी से लड़ रहा है और ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को देख कर इन से फ़रियाद करने लगा तब ह़ज़रते **45 :** मुराद येह थी कि रोज़ लोगों से लड़ता है, अपने आप को भी मुसीबत व परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी, क्यूं ऐसे मौक़ओं से नहीं बचता और क्यूं एह़तियात़ नहीं करता। फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को रह़्म आया और आप ने चाहा कि इस को फ़िरऔ़नी के पन्जए ज़ुल्म से रिहाई दिलाएं। **46 :** या'नी फ़िरऔ़नी पर। तो इसराईली ग़लत़ी से येह समझा कि ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام मुझ से ख़फ़ा हैं मुझे पकड़ना चाहते हैं येह समझ कर **47 :** फ़िरऔ़नी ने येह बात सुनी और जा कर फ़िरऔ़न को इत्तिलाअ़ दी कि कल के फ़िरऔ़नी मक़्तूल के क़ातिल ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام हैं। फ़िरऔ़न ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام के क़त्ल का हुक्म दिया और लोग ह़ज़रते मूसा عَلَیْهِ السَّلَام को ढूंडने निकले **48 :** जिस को मोमिने आले फ़िरऔ़न कहते हैं, येह ख़बर सुन कर क़रीब की राह से **49 :** फ़िरऔ़न के **50 :** शह्‌र से।

www.dawateislami.net

لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٢٠﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ۚ قَالَ رَبِّ

आप का ख़ैर ख़्वाह हूं[51] तो उस शहर से निकला डरता हुवा इस इन्तिज़ार में कि अब क्या होता है अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब

نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢١﴾ وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ ع ٥

मुझे सितम गारों से बचा ले[52] और जब मद्यन की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा[53] कहा

عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿٢٢﴾ وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ

क़रीब है कि मेरा रब मुझे सीधी राह बताए[54] और जब मद्यन के पानी पर आया[55]

وَجَدَ عَلَيْهِ اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ

वहां लोगों के एक गुरौह को देखा कि अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और उन से उस त़रफ़[56] दो औ़रतें देखीं

تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ۫ سكتة وَ

कि अपने जानवरों को रोक रही हैं[57] मूसा ने फ़रमाया तुम दोनों का क्या हाल है[58] वोह बोलीं हम पानी नहीं पिलाते जब तक सब चरवाहे पिला कर फेर न ले जाएं[59] और

اَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿٢٣﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ

हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं[60] तो मूसा ने उन दोनों के जानवरों को पानी पिला दिया फिर साए की त़रफ़ फिरा[61] अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं

لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿٢٤﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى

उस खाने का जो तू मेरे लिये उतारे मोहताज हूं[62] तो उन दोनों में से एक उस के पास आई शर्म

51 : येह बात ख़ैर ख़्वाही और मस्लह़त अन्देशी से कहता हूं। **52 :** या'नी क़ौमे फ़िरऔ़न से। **53 :** मद्यन वोह मक़ाम है जहां ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ रखते थे। इस को मद्यन इब्ने इब्राहीम कहते हैं, मिस्र से यहां तक आठ रोज़ की मसाफ़त है, येह शहर फ़िरऔ़न के हुदूदे क़लम रव (सल्त़नत की हुदूद) से बाहर था, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इस का रास्ता भी न देखा था न कोई सुवारी साथ थी न तोशा न कोई हमराही, राह में दरख़्तों के पत्तों और ज़मीन के सब्ज़े के सिवा ख़ूराक की और कोई चीज़ न मिलती थी। **54 :** चुनान्चे **अल्लाह** तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता भेजा जो आप को मद्यन तक ले गया। **55 :** या'नी कूंए पर जिस से वहां के लोग पानी लेते और अपने जानवरों को सैराब करते थे, येह कूंवां शहर के कनारे था। **56 :** या'नी मर्दों से अ़लाह़दा **57 :** इस इन्तिज़ार में कि लोग फ़ारिग़ हों और कूंवां ख़ाली हो क्यूं कि कूंए को क़वी और ज़ोर आवर लोगों ने घेर रखा था, उन के हुजूम में औ़रतों से मुम्किन न था कि अपने जानवरों को पानी पिला सक्तीं। **58 :** या'नी अपने जानवरों को पानी क्यूं नहीं पिलातीं ? **59 :** क्यूं कि न हम मर्दों के अम्बोह (हुजूम) में जा सकते हैं न पानी खींच सकते हैं, जब येह लोग अपने जानवरों को पानी पिला कर वापस हो जाते हैं तो ह़ौज़ में जो पानी बच रहता है वोह हम अपने जानवरों को पिला लेते हैं। **60 :** ज़ईफ़ हैं ख़ुद येह काम नहीं कर सकते इस लिये जानवरों को पानी पिलाने की ज़रूरत हमें पेश आई। जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन की बातें सुनीं तो आप को रिक़्क़त आई और रह़्म आया और वहीं दूसरा कूंवां जो उस के क़रीब था और एक बहुत भारी पथ्थर उस पर ढका हुवा था जिस को बहुत से आदमी मिल कर हटा सकते थे आप ने तन्हा उस को हटा दिया। **61 :** धूप और गरमी की शिद्दत थी और आप ने कई रोज़ से खाना भी नहीं खाया था, भूक का ग़लबा था इस लिये आराम ह़ासिल करने की ग़रज़ से एक दरख़्त के साए में बैठ गए और बारगाहे इलाही में **62 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को खाना मुलाह़ज़ा फ़रमाए पूरा हफ़्ता गुज़र चुका था, इस दरमियान में एक लुक़्मा तक न खाया था, शिकमे मुबारक पुश्ते अक़्दस से मिल गया था, इस ह़ालत में अपने रब से गिज़ा त़लब की और बा वुजूदे कि बारगाहे इलाही में निहायत क़ुर्बो मन्ज़िलत रखते हैं इस इ़ज्ज़ो इन्किसारी के साथ रोटी का एक टुकड़ा त़लब किया। और जब वोह दोनों साह़िब ज़ादियां उस रोज़ बहुत जल्द अपने मकान वापस हो गईं तो उन के वालिदे माजिद ने फ़रमाया कि आज इस क़दर जल्द वापस आ जाने का क्या सबब हुवा ? अ़र्ज़ किया कि हम ने एक

www.dawateislami.net

اسْتِحْيَآءٍ ؕ قَالَتْ اِنَّ اَبِیْ یَدْعُوْكَ لِیَجْزِیَكَ اَجْرَ مَا سَقَیْتَ لَنَا ؕ

से चलती हुई[63] बोली मेरा बाप तुम्हें बुलाता है कि तुम्हें मज़दूरी दे उस की जो तुम ने हमारे जानवरों को पानी पिलाया है[64]

فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَیْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ وقف نَجَوْتَ مِنَ

जब मूसा उस के पास आया और उसे बातें कह सुनाईं[65] उस ने कहा डरिये नहीं आप बच गए

الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا یٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ؗ اِنَّ خَیْرَ

ज़ालिमों से[66] उन में की एक बोली[67] ऐ मेरे बाप इन को नोकर रख लो[68] बेशक बेहतर

مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِیُّ الْاَمِیْنُ ﴿۲۶﴾ قَالَ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ

नोकर वोह जो ताक़त वर अमानत दार हो[69] कहा मैं चाहता हूं कि अपनी इन दोनों बेटियों में

اِحْدَى ابْنَتَیَّ هٰتَیْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِیْ ثَمٰنِیَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ

से एक तुम्हें बियाह दूं[70] इस महर पर कि तुम आठ बरस मेरी मुलाज़मत करो[71] फिर अगर पूरे दस

عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِیْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَیْكَ ؕ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ

बरस कर लो तो तुम्हारी तरफ़ से है[72] और मैं तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहता[73] क़रीब है

नेक मर्द पाया, उस ने हम पर रह़्म किया और हमारे जानवरों को सैराब कर दिया। इस पर उन के वालिद साहिब ने एक साहिब ज़ादी से फ़रमाया कि जाओ और उस मर्दे सालेह़ को मेरे पास बुला लाओ **63 :** चेहरा आस्तीन से ढके जिस्म छुपाए, येह बड़ी साहिब ज़ादी थीं, इन का नाम सफ़ूरा है। और एक क़ौल येह है कि वोह छोटी साहिब ज़ादी थीं। **64 :** ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام उजरत लेने पर राज़ी न हुए लेकिन ह़ज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام की ज़ियारत और उन की मुलाक़ात के क़स्द से चले और उन साहिब ज़ादी साहिबा से फ़रमाया कि आप मेरे पीछे रह कर रस्ता बताती जाइये। येह आप ने पर्दे के एहतिमाम के लिये फ़रमाया, और इस त़रह़ तशरीफ़ लाए। जब ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام के पास पहुंचे तो खाना ह़ाज़िर था, ह़ज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया बैठिये खाना खाइये। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने मन्ज़ूर न किया और اَعُوْذُ بِاللّٰہ फ़रमाया। ह़ज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया क्या सबब खाने में क्यूं उ़ज़्र है क्या आप को भूक नहीं है ? फ़रमाया कि मुझे येह अन्देशा है कि येह खाना मेरे उस अ़मल का इ़वज़ न हो जाए जो मैं ने आप के जानवरों को पानी पिला कर अन्जाम दिया है क्यूं कि हम वोह लोग हैं कि अ़मले ख़ैर पर इ़वज़ लेना क़बूल नहीं करते। ह़ज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ जवान ! ऐसा नहीं है, येह खाना आप के अ़मल के इ़वज़ में नहीं बल्कि मेरी और मेरे आबाओ अज्दाद की आ़दत है कि हम मेहमान ख़्वानी किया करते हैं और खाना खिलाते हैं। तो आप बैठे और आप ने खाना तनावुल फ़रमाया। **65 :** और तमाम वाक़िआ़त व अह़वाल जो फ़िरऔ़न के साथ गुज़रे थे अपनी विलादत शरीफ़ से ले कर क़िब्ती के क़त्ल और फ़िरऔ़नियों के आप के दरपै जान होने तक के सब ह़ज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام से बयान कर दिये **66 :** या'नी फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नियों से क्यूं कि यहां मद्यन में फ़िरऔ़न की हुकूमत व सल्त़नत नहीं। **मसाइल :** इस से साबित हुवा कि एक शख़्स की ख़बर पर अ़मल करना जाइज़ है। ख़्वाह वोह ग़ुलाम हो या औ़रत हो और येह भी साबित हुवा कि अज्नबिय्या के साथ वरअ़ व एह़तियात़ के साथ चलना जाइज़ है। (مدارک)। **67 :** जो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को बुलाने के वासित़े भेजी गई थी, बड़ी या छोटी। **68 :** येह हमारी बकरियां चराया करें और येह काम हमें न करना पड़े। **69 :** ह़ज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام ने साहिब ज़ादी से दरयाफ़्त किया कि तुम्हें इन की क़ुव्वत व अमानत का क्या इ़ल्म ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि क़ुव्वत तो इस से ज़ाहिर है कि इन्हों ने तन्हा कूंए पर से वोह पथ्थर उठा लिया जिस को दस से कम आदमी नहीं उठा सकते और अमानत इस से ज़ाहिर है कि इन्हों ने हमें देख कर सर झुका लिया और नज़र न उठाई और हम से कहा कि तुम पीछे चलो ऐसा न हो कि हवा से तुम्हारा कपड़ा उड़े और बदन का कोई हिस्सा नुमूदार हो। येह सुन कर ह़ज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से **70 :** येह वा'दा निकाह़ का था अल्फ़ाज़े अ़क़्द न थे क्यूं कि **मस्अला :** अ़क़्द के लिये सीग़ए माज़ी ज़रूरी है। **मस्अला :** और ऐसे ही मन्क़ूहा की ता'यीन भी ज़रूरी है। **71 मस्अला :** आज़ाद मर्द का आज़ाद औ़रत से निकाह़ किसी दूसरे आज़ाद शख़्स

www.dawateislami.net

شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكَ ؕ اَيَّمَا

اِنْ شَآءَ اللّٰهُ تعالیٰ तुम मुझे नेकों में पाओगे[74] मूसा ने कहा येह मेरे और आप के दरमियान इक़्रार हो चुका मैं

ع ۳ ۷ ۶ الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿۲۸﴾ ع

इन दोनों में जो मीआ़द पूरी कर दूं[75] तो मुझ पर कोई मुत़ालबा नहीं और हमारे इस कहे पर अल्लाह का ज़िम्मा है[76]

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَ سَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ

फिर जब मूसा ने अपनी मीआ़द पूरी कर दी[77] और अपनी बीबी को ले कर चला[78] तूर की त़रफ़ से एक आग

نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْۤ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ

देखी[79] अपनी घर वाली से कहा तुम ठहरो मुझे तूर की त़रफ़ से एक आग नज़र पड़ी है शायद मैं वहां से कुछ ख़बर लाऊं[80]

اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِيَ مِنْ

या तुम्हारे लिये कोई आग की चिंगारी लाऊं कि तुम तापो फिर जब आग के पास ह़ाज़िर हुवा निदा की गई

شَاطِئِ الْوَادِ الْاَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰۤى

मैदान के दहने कनारे से[81] बरकत वाले मक़ाम में पेड़ से[82] कि ऐ मूसा

اِنِّيْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۰﴾ ۙ وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ

बेशक मैं ही हूं अल्लाह रब सारे जहान का[83] और येह कि डाल दे अपना अ़सा[84] फिर जब मूसा ने उसे देखा लहराता हुवा

की ख़िदमत करने या बकरियां चराने को महर क़रार दे कर जाइज़ है। **मस्अला :** और अगर आज़ाद मर्द ने किसी मुद्दत तक औ़रत की ख़िदमत करने को या कुरआन की ता'लीम को महर क़रार दे कर निकाह़ किया तो निकाह़ जाइज़ है और येह चीज़ें महर न हो सकेंगी बल्कि इस सूरत में महरे मिस्ल लाज़िम होगा। (ہدایہ واحمدی)। **72 :** या'नी येह तुम्हारी मेहरबानी होगी और तुम पर वाजिब न होगा **73 :** कि तुम पर पूरे दस साल लाज़िम कर दूं। **74 :** तो मेरी त़रफ़ से हुस्ने मुआ़मलत और वफ़ाए अ़हद ही होगी और اِنْ شَآءَ اللّٰهُ تعالیٰ आप ने अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ व मदद पर भरोसा करने के लिये फ़रमाया। **75 :** ख़्वाह दस साल की या आठ साल की **76 :** फिर जब आप का अ़क़्द हो चुका तो ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी साहिब ज़ादी को हुक्म दिया कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को एक अ़सा दें जिस से वोह बकरियों की निगहबानी करें और दरिन्दों को दफ़्अ़ करें। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام के पास अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के कई अ़सा थे, साहिब ज़ादी साहिबा का हाथ ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के अ़सा पर पड़ा जो आप जन्नत से लाए थे और अम्बिया उस के वारिस होते चले आए थे और वोह ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام को पहुंचा था। ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने येह अ़सा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को दिया। **77 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि आप ने बड़ी मीआ़द या'नी दस साल पूरे किये फिर ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام से मिस्र की त़रफ़ वापस जाने की इजाज़त चाही, आप ने इजाज़त दी। **78 :** उन के वालिद की इजाज़त से मिस्र की त़रफ़। **79 :** जब कि आप जंगल में थे, अंधेरी रात थी, सरदी शिद्दत की पड़ रही थी, रास्ता गुम हो गया था, उस वक़्त आप ने आग देख कर **80 :** राह की, कि किस त़रफ़ है। **81 :** जो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते रास्त की त़रफ़ था। **82 :** वोह दरख़्त उ़न्नाब का था या औ़सज का (औ़सज एक ख़ारदार दरख़्त है जो जंगलों में होता है)। **83 :** जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सर सब्ज़ दरख़्त में आग देखी तो जान लिया कि अल्लाह तआ़ला के सिवा येह किसी की क़ुदरत नहीं और बेशक इस कलाम का अल्लाह तआ़ला ही मुतकल्लिम है। येह भी मन्क़ूल है कि येह कलाम ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सिर्फ़ गोशे मुबारक ही से नहीं बल्कि अपने जिस्मे अक़्दस के हर हर जुज़ से सुना। **84 :** चुनान्चे आप ने अ़सा डाल दिया वोह सांप बन गया।

www.dawateislami.net

كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰۤى اَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ

गोया सांप है पीठ फेर कर चला और मुड़ कर न देखा[85] ऐ मूसा सामने आ और डर नहीं बेशक तुझे

مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿۳۱﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ

अमान है[86] अपना हाथ[87] गिरेबान में डाल निकलेगा सफ़ेद चमकता बे

سُوْٓءٍ ۡ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ

ऐब[88] और अपना हाथ अपने सीने पर रख ले ख़ौफ़ दूर करने को[89] तो येह दो हुज्जतें हैं तेरे रब की[90]

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ

फ़िरऔन और उस के दरबारियों की त़रफ़ बेशक वोह बे हुक्म (ना फ़रमान) लोग हैं अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मैं

قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿۳۳﴾ وَاَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ

ने उन में एक जान मार डाली है[91] तो डरता हूं कि मुझे क़त्ल कर दें और मेरा भाई हारून उस की ज़बान

مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْۤ ۡ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿۳۴﴾

मुझ से ज़ियादा साफ़ है तो उसे मेरी मदद के लिये रसूल बना कि मेरी तस्दीक़ करे मुझे डर है कि वोह[92] मुझे झुटलाएंगे

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ

फ़रमाया क़रीब है कि हम तेरे बाज़ू को तेरे भाई से क़ुव्वत देंगे और तुम दोनों को ग़लबा अ़त़ा फ़रमाएंगे तो वोह तुम दोनों का कुछ नुक़्सान

اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَاۤ ۚۛ اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ معانقۃ ۱۱

न कर सकेंगे हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों और जो तुम्हारी पैरवी करेंगे ग़ालिब आओगे[93] फिर जब मूसा उन के

مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا

पास हमारी रोशन निशानियां लाया बोले येह तो नहीं मगर बनावट का जादू[94] और हम ने अपने अगले

85 : तब निदा की गई **86 :** कोई ख़त़रा नहीं **87 :** अपनी क़मीस के **88 :** शुआ़ए आफ़्ताब की त़रह़। तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना दस्ते मुबारक गिरेबान में डाल कर निकाला तो उस में ऐसी तेज़ चमक थी जिस से निगाहें झपकीं। **89 :** ताकि हाथ अपनी अस्ली ह़ालत पर आए और ख़ौफ़ रफ़्अ़ हो जाए। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को सीने पर हाथ रखने का हुक्म दिया ताकि जो ख़ौफ़ सांप देखने के वक़्त पैदा हो गया था रफ़्अ़ हो जाए और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द जो ख़ौफ़ज़दा अपना हाथ सीने पर रखेगा उस का ख़ौफ़ दफ़्अ़ हो जाएगा। **90 :** या'नी अ़सा और यदे बैज़ा तुम्हारी रिसालत की बुरहानें हैं **91 :** या'नी क़िब्त़ी मेरे हाथ से मारा गया है **92 :** या'नी फ़िरऔ़न और उस की क़ौम **93 :** फ़िरऔ़न और उस की क़ौम पर। **94 :** उन बद नसीबों ने मो'जिज़ात का इन्कार कर दिया और उन को जादू बता दिया। मत़लब येह था कि जिस त़रह़ तमाम अन्वाए़ सेह़र बात़िल होते हैं इसी त़रह़ مَعَاذَ اللّٰہ येह भी है।

www.dawateislami.net

بِهٰذَا فِیْۤ اٰبَآىٕنَا الْاَوَّلِیْنَ ﴿۳۶﴾ وَ قَالَ مُوْسٰى رَبِّیْۤ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ

बाप दादाओं में ऐसा न सुना[95] और मूसा ने फ़रमाया मेरा रब ख़ूब जानता है जो उस के

بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ

पास से हिदायत लाया[96] और जिस के लिये आख़िरत का घर होगा[97] बेशक ज़ालिम मुराद

الظّٰلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ

को नहीं पहुंचते[98] फ़िरऔ़न बोला ऐ दरबारियो ! मैं तुम्हारे लिये अपने सिवा

غَیْرِیْۚ فَاَوْقِدْ لِیْ یٰهَامٰنُ عَلَى الطِّیْنِ فَاجْعَلْ لِّیْ صَرْحًا لَّعَلِّیْۤ اَطَّلِعُ

कोई ख़ुदा नहीं जानता तो ऐ हामान मेरे लिये गारा पक्का कर[99] एक महल बना[100] कि शायद मैं मूसा

اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰىۙ وَ اِنِّیْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۳۸﴾ وَ اسْتَكْبَرَ هُوَ وَ

के ख़ुदा को झांक आऊं[101] और बेशक मेरे गुमान में तो वोह[102] झूटा है[103] और उस ने और उस के

جُنُوْدُهٗ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَ ظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ اِلَیْنَا لَا یُرْجَعُوْنَ ﴿۳۹﴾

लश्करियों ने ज़मीन में बे जा बड़ाई चाही[104] और समझे कि उन्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं

فَاَخَذْنٰهُ وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِی الْیَمِّۚ فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

तो हम ने उसे और उस के लश्कर को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया[105] तो देखो कैसा अन्जाम हुवा

الظّٰلِمِیْنَ ﴿۴۰﴾ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَىٕمَّةً یَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِۚ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ لَا

सितम गारों का और उन्हें हम ने[106] दोज़ख़ियों का पेश्वा बनाया कि आग की त़रफ़ बुलाते हैं[107] और क़ियामत के दिन

یُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَ اَتْبَعْنٰهُمْ فِیْ هٰذِهِ الدُّنْیَا لَعْنَةًۚ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ هُمْ

उन की मदद न होगी और इस दुन्या में हम ने उन के पीछे ला'नत लगाई[108] और क़ियामत के दिन उन

95 : या'नी आप से पहले ऐसा कभी नहीं किया गया। या येह मा'ना हैं कि जो दा'वत आप हमें देते हैं वोह ऐसी नई है कि हमारे आबाओ अज्दाद में भी ऐसी नहीं सुनी गई थी **96 :** या'नी जो ह़क़ पर है और जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने नुबुव्वत के साथ सरफ़राज़ फ़रमाया। **97 :** और वोह वहां की ने'मतों और रह़मतों के साथ नवाज़ा जाएगा। **98 :** या'नी काफ़िरों को आख़िरत की फ़लाह़ मुयस्सर नहीं। **99 :** ईंट तय्यार कर। कहते हैं कि येही दुन्या में सब से पहले ईंट बनाने वाला है, येह सन्अ़त इस से पहले न थी। **100 :** निहायत बुलन्द **101 :** चुनान्चे हामान ने हज़ारहा कारीगर और मज़दूर जम्अ़ किये, ईंटें बनवाईं और इमारती सामान जम्अ़ कर के इतनी बुलन्द इमारत बनवाई कि दुन्या में उस के बराबर कोई इमारत बुलन्द न थी, फ़िरऔ़न ने येह गुमान किया कि (مَعَاذَاللہ) **अल्लाह** तआ़ला के लिये भी मकान है और वोह जिस्म है कि उस तक पहुंचना इस के लिये मुम्किन होगा। **102 :** या'नी मूसा عَلَيْهِ السَّلَام **103 :** अपने इस दा'वे में कि उस का एक मा'बूद है जिस ने उस को अपना रसूल बना कर हमारी त़रफ़ भेजा। **104 :** और ह़क़ को न माना और बात़िल पर रहे **105 :** और सब ग़र्क़ हो गए। **106 :** दुन्या में **107 :** या'नी कुफ़्र व मआ़सी की दा'वत देते हैं जिस से अ़ज़ाबे जहन्नम के मुस्तह़िक़ हों और जो इन की इत़ाअ़त करे वोह भी जहन्नमी हो जाए। **108 :** या'नी रुस्वाई और रह़मत से दूरी।

www.dawateislami.net

ع ١٤

مِّنَ الْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِن بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا

का बुरा है और बेशक हम ने मूसा को किताब अ़ता फ़रमाई[109] बा'द इस के कि अगली संगतें (क़ौमें)[110]

الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾

हलाक फ़रमा दीं जिस में लोगों के दिल की आंखें खोलने वाली बातें और हिदायत और रह़मत ताकि वोह नसीह़त मानें

وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنتَ

और तुम[111] तूर की जानिबे मग़रिब में न थे[112] जब कि हम ने मूसा को रिसालत का हुक्म भेजा[113] और उस वक़्त तुम

مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٤٤﴾ وَلَٰكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَ

हाज़िर न थे मगर हुवा येह कि हम ने संगतें पैदा कीं[114] कि उन पर ज़मानए दराज़ गुज़रा[115] और

مَا كُنتَ ثَاوِيًا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَلَٰكِنَّا كُنَّا

न तुम अहले मदयन में मुक़ीम थे उन पर हमारी आयतें पढ़ते हुए हां हम

مُرْسِلِينَ ﴿٤٥﴾ وَمَا كُنتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَٰكِن رَّحْمَةً

रसूल बनाने वाले हुए[116] और न तुम तूर के कनारे थे जब हम ने निदा फ़रमाई[117] हां तुम्हारे रब की

مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُم مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ

मेहर है (कि तुम्हें ग़ैब के इ़ल्म दिये)[118] कि तुम ऐसी क़ौम को डर सुनाओ जिस के पास तुम से पहले कोई डर सुनाने वाला न आया[119] येह उम्मीद करते हुए कि

يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ

उन को नसीह़त हो और अगर न होता कि कभी पहुंचती उन्हें कोई मुसीबत[120] उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा[121]

فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ وَنَكُونَ

तो कहते ऐ हमारे रब तू ने क्यूं न भेजा हमारी त़रफ़ कोई रसूल कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और

---

109 : या'नी तौरैत। 110 : मिस्ल क़ौमे नूह़ व आ़द व समूद वग़ैरा के 111 : ऐ सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّم 112 : वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मीक़ात था। 113 : और उन से कलाम फ़रमाया और उन्हें मुक़र्रब किया। 114 : या'नी बहुत सी उम्मतें, बा'द ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के 115 : तो वोह अल्लाह का अ़ह्द भूल गए और उन्हों ने उस की फ़रमां बरदारी तर्क की, और इस की ह़क़ीक़त येह है कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन की क़ौम से सय्यिदे आ़लम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ह़क़ में और आप पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ अ़ह्द लिये थे। जब दराज़ ज़माना गुज़रा और उम्मतों के बा'द उम्मतें गुज़रती चली गईं तो वोह लोग उन अ़ह्दों को भूल गए और उस की वफ़ा तर्क कर दी। 116 : तो हम ने आप को इ़ल्म दिया और पहलों के ह़ालात पर मुत्तलअ़ किया। 117 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को तौरैत अ़ता फ़रमाने के वक़्त। 118 : जिन से तुम उन के अह़वाल बयान फ़रमाते हो, आप का इन उमूर की ख़बर देना आप की नुबुव्वत की ज़ाहिर दलील है। 119 : इस क़ौम से मुराद अहले मक्का हैं जो ज़मानए फ़ित्रत (दो पैग़म्बरों के दरमियान के ज़माने) में थे, जो ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّم व ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दरमियान पांच सो पचास बरस की मुद्दत का है। 120 : अ़ज़ाब व सज़ा 121 : या'नी जो कुफ़्रो

www.dawateislami.net

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَاۤ اُوْتِیَ

ईमान लाते[122] फिर जब उन के पास हक़ आया[123] हमारी त़रफ़ से बोले[124] इन्हें क्यूं न दिया गया

مِثْلَ مَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰی ؕ اَوَلَمْ یَكْفُرُوْا بِمَاۤ اُوْتِیَ مُوْسٰی مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا

जो मूसा को दिया गया[125] क्या उस के मुन्किर न हुए थे जो पहले मूसा को दिया गया[126] बोले

سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ۫ وَقَالُوْۤا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ

दो जादू हैं एक दूसरे की पुश्ती (इमदाद) पर और बोले हम इन दोनों के मुन्किर हैं[127] तुम फ़रमाओ तो अल्लाह के पास से कोई

عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰی مِنْهُمَاۤ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿٤٩﴾ فَاِنْ لَّمْ

किताब ले आओ जो इन दोनों किताबों से ज़ियादा हिदायत की हो[128] मैं उस की पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो[129] फिर अगर

یَسْتَجِیْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا یَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ

वोह येह तुम्हारा फ़रमाना क़बूल न करें[130] तो जान लो कि[131] बस वोह अपनी ख़्वाहिशों ही के पीछे हैं और उस से बढ़ कर गुमराह कौन जो अपनी ख़्वाहिश की

ع ٥ ٨

هَوٰىهُ بِغَیْرِ هُدًی مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الظّٰلِمِیْنَ ﴿٥٠﴾

पैरवी करे अल्लाह की हिदायत से जुदा बेशक अल्लाह हिदायत नहीं फ़रमाता ज़ालिम लोगों को

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ یَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ

और बेशक हम ने उन के लिये बात मुसल्सल उतारी[132] कि वोह ध्यान करें जिन को हम ने इस से पहले[133]

इस्यान उन्हों ने किया **122 :** मा'ना आयत के येह हैं कि रसूलों का भेजना ही इल्ज़ामे हुज्जत के लिये है कि उन्हें येह उ़ज़्र करने की गुन्जाइश न मिले कि हमारे पास रसूल नहीं भेजे गए, इस लिये गुमराह हो गए, अगर रसूल आते तो हम ज़रूर मुत़ीअ़ होते और ईमान लाते। **123 :** या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم । **124 :** मक्का के कुफ़्फ़ार **125 :** या'नी उन्हें कुरआने करीम यक्बारगी क्यूं नहीं दिया गया जैसा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को पूरी तौरैत एक ही बार में अ़त़ा की गई थी। या येह मा'ना हैं कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को अ़सा और यदे बैज़ा जैसे मो'जिज़ात क्यूं न दिये गए ? **अल्लाह** तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : **126 :** यहूद ने कुरैश को पैग़ाम भेजा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के से मो'जिज़ात त़लब करें। इस पर येह आयत नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि जिन यहूद ने येह सुवाल किया है क्या वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के और जो उन्हें **अल्लाह** की त़रफ़ से दिया गया है उस के मुन्किर न हुए ? **127 :** या'नी तौरैत के भी और कुरआन के भी, इन दोनों को उन्हों ने जादू कहा। और एक क़िराअत में ''سَاحِرَانِ'' है। इस तक़्दीर पर मा'ना येह होंगे कि दोनों जादूगर हैं या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीने मक्का ने यहूदे मदीना के सरदारों के पास क़ासिद भेज कर दरयाफ़्त किया कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत कुतुबे साबिक़ा में कोई ख़बर है ? उन्हों ने जवाब दिया कि हां हुज़ूर की ना'त व सिफ़त उन की किताब तौरैत में मौजूद है। जब येह ख़बर कुरैश को पहुंची तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام व सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की निस्बत कहने लगे कि वोह दोनों जादूगर हैं, उन में एक दूसरे का मुईनो मददगार है। इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : **128 :** या'नी तौरैत व कुरआन से। **129 :** अपने इस क़ौल में कि येह दोनों जादू या जादूगर हैं। इस में तम्बीह है कि वोह इस के मिस्ल किताब लाने से आ़जिज़े मह़ज़ हैं, चुनान्चे आगे इर्शाद फ़रमाया जाता है **130 :** और ऐसी किताब न ला सकें **131 :** उन के पास कोई हुज्जत नहीं है। **132 :** या'नी कुरआने करीम उन के पास पयापै (मुतवातिर) और मुसल्सल आया, वा'द और वई़द और क़सस और इ़ब्रतें और मौइ़ज़तें ताकि समझें और ईमान लाएं। **133 :** या'नी कुरआन शरीफ़ से या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से पहले। **शाने नुज़ूल :** येह आयत मोमिनीने अहले किताब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्ह़ाब के ह़क़ में नाज़िल हुई। और

www.dawateislami.net

النصف

الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِهٖۤ

किताब दी वोह उस पर ईमान लाते हैं और जब उन पर येह आयतें पढ़ी जाती हैं कहते हैं हम इस पर ईमान लाए

اِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَاۤ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِیْنَ ﴿۵۳﴾ اُولٰٓىٕكَ یُؤْتَوْنَ

बेशक येही हक़ है हमारे रब के पास से हम इस से पहले ही गरदन रख चुके थे[134] उन को उन का अज्र

اَجْرَهُمْ مَّرَّتَیْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَ یَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّیِّئَةَ وَ مِمَّا

दोबाला दिया जाएगा[135] बदला उन के सब्र का[136] और वोह भलाई से बुराई को टालते हैं[137] और हमारे दिये

رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ﴿۵۴﴾ وَ اِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَ قَالُوْا لَنَاۤ

से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं[138] और जब बेहूदा बात सुनते हैं उस से तग़ाफ़ुल करते हैं[139] और कहते हैं हमारे लिये

اَعْمَالُنَا وَ لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ٘ سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ٘ لَا نَبْتَغِی الْجٰهِلِیْنَ ﴿۵۵﴾ اِنَّكَ

हमारे अ़मल और तुम्हारे लिये तुम्हारे अ़मल बस तुम पर सलाम[140] हम जाहिलों के ग़रज़ी (चाहने वाले) नहीं[141] बेशक

لَا تَهْدِیْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ۚ وَ هُوَ اَعْلَمُ

येह नहीं कि तुम जिसे अपनी त़रफ़ से चाहो हिदायत कर दो हां **अल्लाह** हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे और वोह ख़ूब जानता है

بِالْمُهْتَدِیْنَ ﴿۵۶﴾ وَ قَالُوْۤا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ

हिदायत वालों को[142] और कहते हैं अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो लोग हमारे मुल्क से हमें उचक

एक क़ौल येह है कि येह उन अहले इन्जील के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ह़ब्शा से आ कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान लाए। येह चालीस ह़ज़रात थे, ह़ज़रते जा'फ़र बिन अबी त़ालिब के साथ आए। जब उन्हों ने मुसल्मानों की ह़ाजत और तंगिये मआ़श देखी तो बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि हमारे पास माल हैं, हुज़ूर इजाज़त दें तो हम वापस जा कर अपने माल ले आएं और उन से मुसल्मानों की ख़िदमत करें। हुज़ूर ने इजाज़त दी और वोह जा कर अपने माल ले आए और उन से मुसल्मानों की ख़िदमत की, उन के ह़क़ में येह आयात "مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ" तक नाज़िल हुईं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह आयतें अस्सी[80] अहले किताब के ह़क़ में नाज़िल हुईं जिन में चालीस नजरान के और बत्तीस ह़ब्शा के और आठ शाम के थे। **134 :** या'नी नुज़ूले क़ुरआन से क़ब्ल ही हम ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर ईमान रखते थे कि वोह नबिय्ये बरह़क़ हैं क्यूं कि तौरैत व इन्जील में उन का ज़िक्र है। **135 :** क्यूं कि वोह पहली किताब पर भी ईमान लाए और क़ुरआने पाक पर भी। **136 :** कि उन्हों ने अपने दीन पर भी सब्र किया और मुश्रिकीन की ईज़ा पर भी। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोग ऐसे हैं जिन्हें दो अज्र मिलेंगे **एक** अहले किताब का वोह शख़्स जो अपने नबी पर ईमान लाया और सय्यिदे अम्बिया मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم पर भी। **दूसरा** वोह ग़ुलाम जिस ने **अल्लाह** का ह़क़ भी अदा किया और मौला का भी। **तीसरा** वोह जिस के पास बांदी थी जिस से क़ुर्बत करता था फिर उस को अच्छी त़रह़ अदब सिखाया अच्छी ता'लीम दी और आज़ाद कर के उस से निकाह़ कर लिया उस के लिये भी दो अज्र हैं। **137 :** त़ाअ़त से मा'सियत को और ह़िल्म से ईज़ा को, ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि तौह़ीद की शहादत या'नी "اَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ" से शिर्क को। **138 :** त़ाअ़त में, या'नी सदक़ा करते हैं। **139 :** मुश्रिकीन मक्कए मुकर्रमा के ईमानदारों को उन का दीन तर्क करने और इस्लाम क़बूल करने पर गालियां देते और बुरा कहते, येह ह़ज़रात उन की बेहूदा बातें सुन कर ए'राज़ फ़रमाते **140 :** या'नी हम तुम्हारी बेहूदा बातों और गालियों के जवाब में गालियां न देंगे। **141 :** उन के साथ मेलजोल निशिस्त व बरख़ास्त नहीं चाहते, हमें जाहिलाना ह़रकात गवारा नहीं। (نُسِخَ ذٰلِکَ بِالْقِتَالِ)। **142 :** जिन के लिये उस

اَرْضِنَا ؕ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰۤى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَیْءٍ

ले जाएंगे[143] क्या हम ने उन्हें जगह न दी अमान वाली हरम में[144] जिस की तरफ़ हर चीज़ के फल

رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ

लाए जाते हैं हमारे पास की रोज़ी लेकिन उन में अक्सर को इल्म नहीं[145] और कितने शहर हम ने हलाक

قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا

कर दिये जो अपने ऐश पर इतरा गए थे[146] तो येह हैं उन के मकान[147] कि उन के बा'द इन में सुकूनत न हुई मगर

قَلِيْلًا ؕ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿۵۸﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى

कम[148] और हमीं वारिस हैं[149] और तुम्हारा रब शहरों को हलाक नहीं करता जब तक

يَبْعَثَ فِيْۤ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِى الْقُرٰۤى

उन के अस्ल मरजअ़ में रसूल न भेजे[150] जो उन पर हमारी आयतें पढ़े[151] और हम शहरों को हलाक नहीं करते

اِلَّا وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَمَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

मगर जब कि उन के साकिन सितम गार हों[152] और जो कुछ चीज़ तुम्हें दी गई है वोह दुन्यवी ज़िन्दगी का बरतावा

ने हिदायत मुक़द्दर फ़रमाई, जो दलाइल से पन्द पज़ीर होने और हक़ बात मानने वाले हैं। **शाने नुज़ूल :** मुस्लिम शरीफ़ में हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि येह आयत अबू तालिब के हक़ में नाज़िल हुई, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन से उन की मौत के वक़्त फ़रमाया : ऐ चचा ! कह "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ" मैं तुम्हारे लिये रोज़े क़ियामत शाहिद होउंगा। उन्हों ने कहा कि अगर मुझे क़ुरैश के आ़र देने का अन्देशा न होता तो मैं ज़रूर ईमान ला कर तुम्हारी आंख ठन्डी करता। इस के बा'द उन्हों ने येह शे'र पढ़े "وَلَقَدْ عَلِمْتُ بِاَنَّ دِیْنَ مُحَمَّدٍ مِنْ خَیْرِ اَدْیَانِ الْبَرِیَّۃِ دِیْنًا لَوْ لَا الْمَلَامَۃُ اَوْ حِذَارُ مُسَبَّۃٍ لَوَجَدْتَنِیْ سَمْحًا بِذَاکَ مُبِیْنًا" या'नी मैं यक़ीन से जानता हूं कि मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم का दीन तमाम जहानों के दीनों से बेहतर है अगर मलामत व बदगोई का अन्देशा न होता तो मैं निहायत सफ़ाई के साथ इस दीन को क़बूल करता। इस के बा'द अबू तालिब का इन्तिक़ाल हो गया, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **143 :** या'नी सर ज़मीने अ़रब से एक दम निकाल देंगे। **शाने नुज़ूल :** येह आयत हारिस बिन उ़स्मान बिन नौफ़ल बिन अ़ब्दे मनाफ़ के हक़ में नाज़िल हुई। उस ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से कहा था कि येह तो हम यक़ीन से जानते हैं कि जो आप फ़रमाते हैं वोह हक़ है लेकिन अगर हम आप के दीन का इत्तिबाअ़ करें तो हमें डर है कि अ़रब के लोग हमें शहर बदर कर देंगे और हमारे वतन में न रहने देंगे। इस आयत में इस का जवाब दिया गया। **144 :** जहां के रहने वाले क़त्लो ग़ारत से अम्न में हैं और जहां जानवरों और सब्ज़ों तक को अम्न है। **145 :** और वोह अपनी जहालत से नहीं जानते कि येह रोज़ी **अल्लाह** तआ़ला की तरफ़ से है अगर येह समझ होती तो जानते कि ख़ौफ़ व अम्न भी उसी की तरफ़ से है और ईमान लाने में शहर बदर किये जाने का ख़ौफ़ न करते। **146 :** और उन्हों ने तुग़यान इख़्तियार किया था कि **अल्लाह** तआ़ला की दी हुई रोज़ी खाते और पूजते बुतों को, अहले मक्का को ऐसी क़ौम के ख़राब अन्जाम से ख़ौफ़ दिलाया जाता है जिन का हाल उन की तरह था कि **अल्लाह** तआ़ला की ने'मतें पाते और शुक्र न करते, उन ने'मतों पर इतराते, वोह हलाक कर दिये गए। **147 :** जिन के आसार बाक़ी हैं और अ़रब के लोग अपने सफ़रों में उन्हें देखते हैं। **148 :** कि कोई मुसाफ़िर या रहरव (राह चलता) इन में थोड़ी देर के लिये ठहर जाता है फिर ख़ाली पड़े रहते हैं। **149 :** इन मकानों के। या'नी वहां के रहने वाले ऐसे हलाक हुए कि उन के बा'द उन का कोई जा नशीन बाक़ी न रहा, अब **अल्लाह** के सिवा इन मकानों का कोई वारिस नहीं, ख़ल्क़ की फ़ना के बा'द वोही सब का वारिस है। **150 :** या'नी मर्कज़ी मक़ाम में। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि उम्मुल क़ुरा से मुराद मक्कए मुकर्रमा है और रसूल से मुराद ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم। **151 :** और उन्हें तब्लीग़ करे और ख़बर दे कि अगर वोह ईमान न लाएंगे तो उन पर अ़ज़ाब किया जाएगा ताकि उन पर हुज्जत लाज़िम हो और उन के लिये उ़ज़्र की गुन्जाइश बाक़ी न रहे। **152 :** रसूल की तक्ज़ीब करते हों, अपने कुफ़्र पर मुसिर (डटे हुए) हों और इस सबब से अ़ज़ाब के

www.dawateislami.net

وَزِينَتُهَا ۚ وَمَا عِندَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ ع

और उस का सिंगार है[153] और जो अल्लाह के पास है[154] वोह बेहतर और ज़ियादा बाक़ी रहने वाला[155] तो क्या तुम्हें अ़क़्ल नहीं[156] तो क्या वोह जिसे हम ने

وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ

अच्छा वा'दा दिया[157] तो वोह उस से मिलेगा उस जैसा है जिसे हम ने दुन्यवी ज़िन्दगी का बरताव बरत्ने दिया फिर वोह क़ियामत

الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ

के दिन गिरिफ़्तार कर के ह़ाज़िर लाया जाएगा[158] और जिस दिन उन्हें निदा करेगा[159] तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे

الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا

वोह शरीक जिन्हें तुम[160] गुमान करते थे कहेंगे वोह जिन पर बात साबित हो चुकी[161] ऐ हमारे रब

هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ ؗ مَا كَانُوْٓا

येह हैं वोह जिन्हें हम ने गुमराह किया हम ने उन्हें गुमराह किया जैसे ख़ुद गुमराह हुए थे[162] हम उन से बेज़ार हो कर तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाते हैं वोह

اِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا

हम को न पूजते थे[163] और उन से फ़रमाया जाएगा अपने शरीकों को पुकारो[164] तो वोह पुकारेंगे तो वोह उन की न

لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ

सुनेंगे और देखेंगे अ़ज़ाब क्या अच्छा होता अगर वोह राह पाते[165] और जिस दिन उन्हें निदा करेगा

فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ

तो फ़रमाएगा[166] तुम ने रसूलों को क्या जवाब दिया[167] तो उस दिन उन पर ख़बरें अन्धी

يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا

हो जाएंगी[168] तो वोह कुछ पूछगछ न करेंगे[169] तो वोह जिस ने तौबा की[170] और ईमान लाया[171] और अच्छा काम किया

मुस्तह़िक़ हों। **153 :** जिस की बक़ा बहुत थोड़ी और जिस का अन्जाम फ़ना। **154 :** या'नी आख़िरत के मनाफ़ेअ़ **155 :** तमाम कदूरतों से ख़ाली और दाइम, ग़ैर मुन्क़त़अ़। **156 :** कि इतना समझ सको कि बाक़ी फ़ानी से बेहतर है, इसी लिये कहा गया है कि जो शख़्स आख़िरत को दुन्या पर तरजीह़ न दे वोह नादान है। **157 :** सवाबे जन्नत का। **158 :** येह दोनों हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते, इन में पहला जिसे अच्छा वा'दा दिया गया मोमिन है और दूसरा काफ़िर। **159 :** अल्लाह तआ़ला ब त़रीक़े तौबीख़ **160 :** दुन्या में मेरा शरीक **161 :** या'नी अ़ज़ाब वाजिब हो चुका और वोह लोग अहले ज़लालत (गुमराहों) के सरदार और अइम्मए कुफ़्र हैं। **162 :** या'नी वोह लोग हमारे बहकाने से ब इख़्तियारे ख़ुद गुमराह हुए हमारी उन की गुमराही में कोई फ़र्क़ नहीं हम ने उन्हें मजबूर न किया था। **163 :** बल्कि वोह अपनी ख़्वाहिशों के परस्तार और अपनी शहवात के मुत़ीअ़ थे। **164 :** या'नी कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा कि अपने बुतों को पुकारो वोह तुम्हें अ़ज़ाब से बचाएं **165 :** दुन्या में ताकि आख़िरत में अ़ज़ाब न देखते। **166 :** या'नी कुफ़्फ़ार से दरयाफ़्त फ़रमाएगा **167 :** जो तुम्हारी त़रफ़ भेजे गए थे और ह़क़ की दा'वत देते थे। **168 :** और कोई उ़ज़्र और हुज्जत उन्हें नज़र न आएगी **169 :** और ग़ायते दह्शत से साकित रह जाएंगे या कोई

www.dawateislami.net

فَعَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَ رَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَ

क़रीब है कि वोह राहयाब हो और तुम्हारा रब पैदा करता है जो चाहे और

يَخْتَارُؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٨﴾

पसन्द फ़रमाता है[172] उन का[173] कुछ इख़्तियार नहीं पाकी और बरतरी है **अल्लाह** को उन के शिर्क से

وَ رَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَ هُوَ اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ

और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों में छुपा है[174] और जो ज़ाहिर करते हैं[175] और वोही है **अल्लाह** कि

اِلَّا هُوَؕ لَهُ الْحَمْدُ فِی الْاُوْلٰى وَ الْاٰخِرَةِ٘ وَ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَیْهِ

कोई ख़ुदा नहीं उस के सिवा उसी की ता'रीफ़ है दुन्या और आख़िरत में[176] और उसी का हुक्म है[177] और उसी की त़रफ़

تُرْجَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَیْكُمُ الَّیْلَ سَرْمَدًا اِلٰى

फिर जाओगे तुम फ़रमाओ[178] भला देखो तो अगर **अल्लाह** हमेशा तुम पर

یَوْمِ الْقِیٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ یَاْتِیْكُمْ بِضِیَآءٍؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿٧١﴾ قُلْ

क़ियामत तक रात रखे[179] तो **अल्लाह** के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हें रोशनी ला दे[180] तो क्या तुम सुनते नहीं[181] तुम फ़रमाओ

اَرَءَیْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَیْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى یَوْمِ الْقِیٰمَةِ

भला देखो तो अगर **अल्लाह** क़ियामत तक हमेशा दिन रखे[182]

مَنْ اِلٰهٌ غَیْرُ اللّٰهِ یَاْتِیْكُمْ بِلَیْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِیْهِؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَ

तो **अल्लाह** के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हें रात ला दे जिस में आराम करो[183] तो क्या तुम्हें सूझता नहीं[184] और

किसी से इस लिये न पूछेगा कि जवाब से आ़जिज़ होने में सब के सब बराबर हैं ताबेअ़ हों या मत्बूअ़ काफ़िर हों या काफ़िर गर। **170 :** शिर्क से **171 :** अपने रब पर और उस तमाम पर जो रब की त़रफ़ से आया **172 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुश्रिकीन के जवाब में नाज़िल हुई, जिन्हों ने कहा था कि **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को नुबुव्वत के लिये क्यूं बरगुज़ीदा किया ? येह क़ुरआन मक्का व त़ाइफ़ के किसी बड़े शख़्स पर क्यूं न उतारा ? इस कलाम का क़ाइल वलीद बिन मुग़ीरा था और बड़े आदमी से वोह अपने आप को और उ़र्वह बिन मस्ऊ़द सक़फ़ी को मुराद लेता था। उस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि रसूलों का भेजना उन लोगों के इख़्तियार से नहीं है **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी है अपनी ह़िक्मत वोही जानता है, उन्हें उस की मरज़ी में दख़्ल की क्या मजाल। **173 :** या'नी मुश्रिकीन का **174 :** या'नी कुफ़्र और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की अ़दावत जिस को येह लोग छुपाते हैं **175 :** अपनी ज़बानों से ख़िलाफ़े वाक़ेअ़ जैसे कि नुबुव्वत में त़ा'न करना और क़ुरआने पाक की तक्ज़ीब। **176 :** कि उस के औलिया दुन्या में भी उस की ह़म्द करते हैं और आख़िरत में भी उस की ह़म्द से लज़्ज़त उठाते हैं। **177 :** उसी की क़ज़ा हर चीज़ में नाफ़िज़ व जारी है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अपने फ़रमां बरदारों के लिये मग़्फ़िरत का और ना फ़रमानों के लिये शफ़ाअ़त का हुक्म फ़रमाता है। **178 :** ऐ ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ! अहले मक्का से **179 :** और दिन निकाले ही नहीं **180 :** जिस में तुम अपनी मआ़श के काम कर सको। **181 :** गोशे होश से कि शिर्क से बाज़ आओ। **182 :** रात होने ही न दे **183 :** और दिन में जो काम और मेह़नत की थी उस की तकान दूर करो। **184 :** कि तुम कितनी बड़ी ग़लत़ी में हो जो उस के साथ और को शरीक करते हो।

www.dawateislami.net

مِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ وَ النَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ

उस ने अपनी मेह्‌र (रह्‌मत) से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज़्ल

فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ وَ یَوْمَ یُنَادِیْهِمْ فَیَقُوْلُ اَیْنَ شُرَكَآءِیَ

ढूंडो[185] और इस लिये कि तुम हक़ मानो[186] और जिस दिन उन्हें निदा करेगा तो फ़रमाएगा कहां हैं मेरे

الَّذِیْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۷۴﴾ وَ نَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِیْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا

वोह शरीक जो तुम बकते थे और हर गुरोह में से हम एक गवाह निकाल कर[187] फ़रमाएंगे अपनी

بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْۤا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۷۵﴾ ع اِنَّ ع ١٥

दलील लाओ[188] तो जान लेंगे कि[189] हक़ अल्लाह का है और उन से खोई जाएंगी जो बनावटें करते थे[190] बेशक

قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَیْهِمْ ۪ وَ اٰتَیْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَاۤ

क़ारून मूसा की क़ौम से था[191] फिर उस ने उन पर ज़ियादती की और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिये

اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِی الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ

जिन की कुन्जियां एक ज़ोर आवर जमाअ़त पर भारी थीं जब उस से उस की क़ौम[192] ने कहा इतरा नहीं[193]

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْفَرِحِیْنَ ﴿۷۶﴾ وَ ابْتَغِ فِیْمَاۤ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ

बेशक अल्लाह इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता और जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उस से आख़िरत का घर त़लब कर[194]

وَ لَا تَنْسَ نَصِیْبَكَ مِنَ الدُّنْیَا وَ اَحْسِنْ كَمَاۤ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَیْكَ وَ لَا

और दुन्या में अपना ह़िस्सा न भूल[195] और एह़सान कर[196] जैसा अल्लाह ने तुझ पर एह़सान किया और[197]

185 : कस्बे मआ़श करो 186 : और उस की ने'मतों का शुक्र बजा लाओ। 187 : यहां गवाह से रसूल मुराद हैं जो अपनी अपनी उम्मतों पर शहादत देंगे कि उन्हों ने इन्हें रब के पयाम पहुंचाए और नसीह़तें कीं। 188 : या'नी शिर्क और रसूलों की मुख़ालफ़त जो तुम्हारा शेवा था, इस पर क्या दलील है ? पेश करो। 189 : इलाहिय्यत व मा'बूदिय्यत ख़ास 190 : दुन्या में कि अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक ठहराते थे। 191 : क़ारून ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के चचा "यस्हर" का बेटा था, निहायत ख़ूब सूरत शकील आदमी था, इसी लिये इस को मुनव्वर कहते थे और बनी इसराईल में तौरैत का सब से बेहतर क़ारी था, नादारी के ज़माने में निहायत मुतवाज़ेअ़ व बा अख़्लाक़ था, दौलत हाथ आते ही इस का ह़ाल मुतग़य्यिर हुवा और सामिरी की त़रह़ मुनाफ़िक़ हो गया। कहा गया है कि फ़िरऔ़न ने इस को बनी इसराईल पर ह़ाकिम बना दिया था। 192 : या'नी मोमिनीने बनी इसराईल 193 : कस्रते माल पर 194 : अल्लाह की ने'मतों का शुक्र कर के और माल को ख़ुदा की राह में ख़र्च कर के। 195 : या'नी दुन्या में आख़िरत के लिये अ़मल कर कि अ़ज़ाब से नजात पाए, इस लिये कि दुन्या में इन्सान का ह़क़ीक़ी ह़िस्सा येह है कि आख़िरत के लिये अ़मल करे, सदक़ा दे कर, सिलए रेह़्मी कर के और आ'माले ख़ैर के साथ। और इस की तफ़्सीर में येह भी कहा गया है कि अपनी सिह़्ह़त व क़ुव्वत व जवानी व दौलत को न भूल इस से कि इन के साथ आख़िरत त़लब करे। ह़दीस में है कि पांच चीज़ों को पांच से पहले ग़नीमत समझो। जवानी को बुढ़ापे से पहले, तन्दुरुस्ती को बीमारी से पहले, सरवत को नादारी से पहले, फ़राग़त को शग़्ल से पहले, ज़िन्दगी को मौत से पहले। 196 : अल्लाह के बन्दों के साथ। 197 : मआ़सी और गुनाहों का इरतिकाब कर के और ज़ुल्म व बग़ावत कर के।

www.dawateislami.net

تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۷۷﴾ قَالَ اِنَّمَاۤ

ज़मीन में फ़साद न चाह बेशक अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता बोला येह[198]

اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ؕ اَوَ لَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ

तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है[199] और क्या इसे येह नहीं मा'लूम कि अल्लाह ने इस से पहले वोह

مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّ اَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَ لَا يُسْـَٔلُ عَنْ

संगतें (क़ौमें) हलाक फ़रमा दीं जिन की क़ुव्वतें इस से सख़्त थीं और जम्अ इस से ज़ियादा[200] और मुजरिमों से

ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۷۸﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ

उन के गुनाहों की पूछ नहीं[201] तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में[202] बोले वोह जो

يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَاۤ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ

दुन्या की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी तरह हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उस का

حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿۷۹﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ

बड़ा नसीब है और बोले वोह जिन्हें इल्म दिया गया[203] ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का सवाब बेहतर है उस के लिये जो

اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ۚ وَ لَا يُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَ بِدَارِهِ

ईमान लाए और अच्छे काम करे[204] और येह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं[205] तो हम ने उसे[206] और उस के घर को

الْاَرْضَ ۟ قف فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ وَ مَا كَانَ

ज़मीन में धंसा दिया तो उस के पास कोई जमाअ़त न थी कि अल्लाह से बचाने में उस की मदद करती[207] और न वोह

198 : या'नी क़ारून ने कहा कि येह माल **199 :** इस इल्म से मुराद इल्मे तौरैत है या इल्मे कीमिया जो उस ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से हासिल किया था और उस के ज़रीए से रांग को चांदी और तांबे को सोना बना लेता था। या इल्मे तिजारत या इल्मे ज़िराअ़त या और पेशों का इल्म। सहल ने फ़रमाया : जिस ने ख़ुदबीनी की, फ़लाह न पाई। **200 :** या'नी क़ुव्वत व माल में इस से ज़ियादा थे और बड़ी जमाअ़तें रखते थे उन्हें अल्लाह तआ़ला ने हलाक कर दिया। फिर येह क्यूं क़ुव्वत व माल की कसरत पर ग़ुरूर करता है। वोह जानता है कि ऐसे लोगों का अन्जाम हलाक है। **201 :** उन से दरयाफ़्त करने की हाजत नहीं क्यूं कि अल्लाह तआ़ला उन का हाल जानने वाला है, लिहाज़ा इस्ति'लाम के लिये सुवाल न होगा, तौबीख़ व ज़ज्र (डांट डपट) के लिये होगा। **202 :** बहुत से सुवार जिलौ में (हमराह) लिये हुए ज़ेवरों से आरास्ता, हरीरी (रेशमी) लिबास पहने आरास्ता घोड़ों पर सुवार। **203 :** या'नी बनी इसराईल के उ़लमा। **204 :** उस दौलत से जो दुन्या में क़ारून को मिली। **205 :** या'नी अ़मले सालेह साबिरीन ही का हिस्सा हैं और इस का सवाब वोही पाते हैं। **206 :** या'नी क़ारून को **207 :** क़ारून और उस के घर के धंसाने का वाक़िआ़ उ़लमाए सियर व अख़्बार ने येह ज़िक्र किया है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बनी इसराईल को दरिया के पार ले जाने के बा'द मज़्बह की रियासत हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام को तफ़्वीज़ की। बनी इसराईल अपनी क़ुरबानियां हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام के पास लाते और वोह मज़्बह में रखते, आग आस्मान से उतर कर उन को खा लेती। क़ारून को हज़रते हारून के इस मन्सब पर रश्क हुवा, उस ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि रिसालत तो आप की हुई और क़ुरबानी की सरदारी हज़रते हारून की, मैं कुछ भी न रहा बा वुजूदे कि मैं तौरैत का बेहतरीन क़ारी हूं, मैं इस पर सब्र नहीं कर सकता। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि येह मन्सब हज़रते हारून को मैं ने नहीं

www.dawateislami.net

مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿٨١﴾ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ

बदला ले सका[208] और कल जिस ने उस के मर्तबे की आरज़ू की थी सुब्ह[209] कहने लगे

وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَاۤ اَنْ

अ़जब बात है अल्लाह रिज़्क़ वसीअ़ करता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है[210] अगर

مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ تِلْكَ الدَّارُ ع ٨ ١١

अल्लाह हम पर एह़सान न फ़रमाता तो हमें भी धंसा देता ऐ अ़जब काफ़िरों का भला नहीं येह आख़िरत

दिया अल्लाह ने दिया है। क़ारून ने कहा ख़ुदा की क़सम मैं आप की तस्दीक़ न करूंगा जब तक आप इस का सुबूत मुझे दिखा न दें। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने रुअसाए बनी इसराईल को जम्अ़ कर के फ़रमाया : अपनी लाठियां ले आओ। उन्हें सब को अपने कुब्बे में जम्अ़ किया, रात भर बनी इसराईल उन लाठियों का पहरा देते रहे, सुब्ह़ को ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा सर सब्ज़ो शादाब हो गया, उस में पत्ते निकल आए। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया ऐ क़ारून तू ने येह देखा ? क़ारून ने कहा येह आप के जादू से कुछ अ़जीब नहीं। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام उस की मुदारात करते थे और वोह आप को हर वक़्त ईज़ा देता था और उस की सरकशी और तकब्बुर और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ अ़दावत दम बदम तरक़्क़ी पर थी। उस ने एक मकान बनाया जिस का दरवाज़ा सोने का था और उस की दीवारों पर सोने के तख़्ते नस्ब किये। बनी इसराईल सुब्ह़ो शाम उस के पास आते खाने खाते बातें बनाते उसे हंसाते। जब ज़कात का ह़ुक्म नाज़िल हुवा तो क़ारून मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया तो उस ने आप से तै़ किया कि दिरहम व दीनार व मवेशी वग़ैरा में से हज़ारवां ह़िस्सा ज़कात देगा, लेकिन घर जा कर ह़िसाब किया तो उस के माल में से इतना भी बहुत कसीर होता था, उस के नफ़्स ने इतनी भी हिम्मत न की और उस ने बनी इसराईल को जम्अ़ कर के कहा कि तुम ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की हर बात में इत़ाअ़त की अब वोह तुम्हारे माल लेना चाहते हैं क्या कहते हो ? उन्हों ने कहा आप हमारे बड़े हैं जो आप चाहें ह़ुक्म दीजिये। कहने लगा कि फ़ुलानी बद चलन औ़रत के पास जाओ और उस से एक मुआ़वज़ा मुक़र्रर करो कि वोह ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर तोहमत लगाए, ऐसा हुवा तो बनी इसराईल ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को छोड़ देंगे। चुनान्चे क़ारून ने उस औ़रत को हज़ार अशरफ़ी और हज़ार रुपिया और बहुत से मवाईद कर के येह तोहमत लगाने पर तै़ किया और दूसरे रोज़ बनी इसराईल को जम्अ़ कर के ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास आया और कहने लगा कि बनी इसराईल आप का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि आप उन्हें वा'ज़ो नसीह़त फ़रमाएं। ह़ज़रत तशरीफ़ लाए और बनी इसराईल में खड़े हो कर आप ने फ़रमाया कि ऐ बनी इसराईल जो चोरी करेगा उस के हाथ काटे जाएंगे, जो बोहतान लगाएगा उस के अस्सी कोड़े लगाए जाएंगे और जो ज़िना करेगा उस के अगर बीबी नहीं है तो सो कोड़े मारे जाएंगे और अगर बीबी है तो उस को संगसार किया जाएगा यहां तक कि मर जाए। क़ारून कहने लगा कि येह ह़ुक्म सब के लिये है ख़्वाह आप ही हों ? फ़रमाया : ख़्वाह मैं ही क्यूं न होउं। कहने लगा कि बनी इसराईल का ख़याल है कि आप ने फ़ुलां बदकार औ़रत के साथ बदकारी की है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : उसे बुलाओ। वोह आई तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया उस की क़सम जिस ने बनी इसराईल के लिये दरिया फाड़ा और उस में रस्ते बनाए और तौ़रैत नाज़िल की ! सच कह दे। वोह औ़रत डर गई और अल्लाह के रसूल पर बोहतान लगा कर उन्हें ईज़ा देने की जुर्अत उसे न हुई और उस ने अपने दिल में कहा कि इस से तौ़बा करना बेहतर है और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ किया कि जो कुछ क़ारून कहलाना चाहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम येह झूट है और इस ने आप पर तोहमत लगाने के इ़वज़ में मेरे लिये बहुत माले कसीर मुक़र्रर किया है। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने रब के ह़ुज़ूर रोते हुए सज्दे में गिरे और येह अ़र्ज़ करने लगे, या रब अगर मैं तेरा रसूल हूं तो मेरी वज्ह से क़ारून पर ग़ज़ब फ़रमा। अल्लाह तआ़ला ने आप को वह्य फ़रमाई कि मैं ने ज़मीन को आप की फ़रमां बरदारी करने का ह़ुक्म दिया है आप इस को जो चाहें ह़ुक्म दें। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इसराईल से फ़रमाया : ऐ बनी इसराईल अल्लाह तआ़ला ने मुझे क़ारून की त़रफ़ भेजा है जैसा फ़िरऔ़न की त़रफ़ भेजा था, जो क़ारून का साथी हो उस के साथ उस की जगह ठहरा रहे जो मेरा साथी हो जुदा हो जाए। सब लोग क़ारून से जुदा हो गए, सिवाए दो शख़्सों के कोई उस के साथ न रहा। फिर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़मीन को ह़ुक्म दिया कि इन्हें पकड़ ले तो वोह घुटनों तक धंस गए, फिर आप ने येही फ़रमाया तो कमर तक धंस गए, आप येही फ़रमाते रहे ह़त्ता कि वोह लोग गरदनों तक धंस गए। अब वोह बहुत मिन्नत, लजाजत करते थे और क़ारून आप को अल्लाह की क़समें और रिश्ता व क़राबत के वासिते देता था, मगर आप ने इल्तिफ़ात न फ़रमाया, यहां तक कि वोह बिल्कुल धंस गए और ज़मीन बराबर हो गई। क़तादा ने कहा कि वोह क़ियामत तक धंसते ही चले जाएंगे। बनी इसराईल ने कहा कि ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ारून के मकान और उस के ख़ज़ाइन व अम्वाल की वज्ह से उस के लिये बद दुआ़ की। येह सुन कर आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की तो उस का मकान और उस के ख़ज़ाने व अम्वाल सब ज़मीन में धंस गए। 208 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से। 209 : अपनी उस आरज़ू पर नादिम हो कर 210 : जिस के लिये चाहे।

www.dawateislami.net

الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ وَ

का घर[211] हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और

الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۸۳﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَیْرٌ مِّنْهَا ۚ وَ مَنْ جَآءَ

आक़िबत परहेज़ गारों ही की है[212] जो नेकी लाए उस के लिये उस से बेहतर है[213] और जो

بِالسَّیِّئَةِ فَلَا یُجْزَی الَّذِیْنَ عَمِلُوا السَّیِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾

बदी लाए तो बद काम वालों को बदला न मिलेगा मगर जितना किया था

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰی مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ

बेशक जिस ने तुम पर क़ुरआन फ़र्ज़ किया[214] वोह तुम्हें फेर ले जाएगा जहां फिरना चाहते हो[215] तुम फ़रमाओ मेरा रब ख़ूब जानता है

مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰی وَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۸۵﴾ وَ مَا كُنْتَ تَرْجُوْۤا اَنْ

उसे जो हिदायत लाया और जो खुली गुमराही में है[216] और तुम उम्मीद न रखते थे कि

یُّلْقٰۤی اِلَیْكَ الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِیْرًا

किताब तुम पर भेजी जाएगी[217] हां तुम्हारे रब ने रहमत फ़रमाई तो तुम हरगिज़ काफ़िरों की

لِّلْكٰفِرِیْنَ ﴿۸۶﴾ وَ لَا یَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ اُنْزِلَتْ اِلَیْكَ وَ ادْعُ

पुश्ती (मदद) न करना[218] और हरगिज़ वोह तुम्हें अल्लाह की आयतों से न रोकें बा'द इस के कि वोह तुम्हारी त़रफ़ उतारी गईं[219] और अपने रब

اِلٰی رَبِّكَ وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ﴿۸۷﴾ ۚ وَ لَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَاۤ

वقف لازم

की त़रफ़ बुलाओ[220] और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना[221] और अल्लाह के साथ दूसरे ख़ुदा को न पूज उस के

211 : या'नी जन्नत **212 :** महमूद। **213 :** दस गुना सवाब। **214 :** या'नी उस की तिलावत व तब्लीग़ और उस के अह़काम पर अ़मल लाज़िम किया **215 :** या'नी मक्कए मुकर्रमा में। मुराद येह है कि अल्लाह तआ़ला आप को फ़त्ह़े मक्का के दिन मक्कए मुकर्रमा में बड़े शानो शकोह और इ़ज़्ज़तो वक़ार और ग़लबा व इक़्तिदार के साथ दाख़िल करेगा, वहां के रहने वाले सब आप के ज़ेरे फ़रमान होंगे, शिर्क और उस के ह़ामी ज़लीलो रुस्वा होंगे। **शाने नुज़ूल :** येह आयते करीमा जुह़फ़ा में नाज़िल हुई। जब रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मदीने की त़रफ़ हिजरत करते हुए वहां पहुंचे और आप को अपनी और अपने आबा की जाए विलादत मक्कए मुकर्रमा का शौक़ हुवा तो जिब्रीले अमीन आए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि क्या हुज़ूर को अपने शहर मक्कए मुकर्रमा का शौक़ है, फ़रमाया : हां उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है और येह आयते करीमा पढ़ी। معاد की तफ़्सीर मौत व क़ियामत व जन्नत से भी की गई है। **216 :** या'नी मेरा रब जानता है कि मैं हिदायत लाया और मेरे लिये इस का अज्रो सवाब है और मुश्रिकीन गुमराही में हैं और सख़्त अ़ज़ाब के मुस्तह़िक़। **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे मक्का के जवाब में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की निस्बत कहा था ''اِنَّکَ لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ'' या'नी आप ज़रूर खुली गुमराही में हैं। (مَعَاذَ اللّٰہ)। **217 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह ख़ित़ाब ज़ाहिर में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को है और मुराद इस से मोमिनीन हैं। **218 :** उन के मुईनो मददगार न होना। **219 :** या'नी कुफ़्फ़ार की गुमराह कुन बातों की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करना और उन्हें ठुकरा देना। **220 :** ख़ल्क़ को अल्लाह तआ़ला की तौह़ीद और उस की इ़बादत की दा'वत दो। **221 :** उन की इआ़नत व मुवाफ़क़त न करना।

اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۣ كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ۠ ۸۸

सिवा कोई ख़ुदा नहीं हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के उसी का हुक्म है और उसी की त़रफ़ फिर जाओगे[222]

ایاتها ٦٩ ۲۹ سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ ۸۵ ركوعاتها ٧

सूरए अ़न्कबूत मक्किय्या है, इस में उन्हत्तर आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓ ۚ ۱ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَ هُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ ۲

क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उन की आज़्माइश न होगी[2]

وَ لَقَدْ فَتَنَّا الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِیْنَ صَدَقُوْا وَ

और बेशक हम ने उन से अगलों को जांचा[3] तो ज़रूर अल्लाह सच्चों को देखेगा और

لَیَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِیْنَ ۳ اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ اَنْ

ज़रूर झूटों को देखेगा[4] या येह समझे हुए हैं वोह जो बुरे काम करते हैं[5] कि

یَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ۴ مَنْ كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ

हम से कहीं निकल जाएंगे[6] क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो[7] तो बेशक अल्लाह की

222 : आख़िरत में और वोही आ'माल की जज़ा देगा। 1 : सूरए अ़न्कबूत मक्किय्या है, इस में सात रुकूअ़, उन्हत्तर आयतें, नव सो अस्सी कलिमे, चार हज़ार एक सो पेंसठ ह़र्फ़ हैं। 2 : शदाइद, तकालीफ़ और अन्वाअ़ मसाइब और ज़ौक़े त़ाआ़त व तर्के शहवात व बज़्ले जान व माल से उन की ह़क़ीक़ते ईमान ख़ूब ज़ाहिर हो जाए और मोमिने मुख़्लिस और मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ ज़ाहिर हो जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन ह़ज़रात के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मक्कए मुकर्रमा में थे और उन्हों ने इस्लाम का इक़रार किया तो अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उन्हें लिखा कि मह़ज़ इक़रार काफ़ी नहीं जब तक कि हिजरत न करो। उन साहिबों ने हिजरत की और ब क़स्दे मदीना रवाना हुए। मुश्रिकीन उन के दरपै हुए और उन से क़िताल किया। बा'ज़ ह़ज़रात उन में से शहीद हो गए बा'ज़ बच आए। उन के ह़क़ में येह दो आयतें नाज़िल हुईं। और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मुराद उन लोगों से सलमा बिन हिशाम और अ़याश बिन अबी रबीआ़ और वलीद बिन वलीद और अ़म्मार बिन यासिर वग़ैरा हैं जो मक्कए मुकर्रमा में ईमान लाए। और एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रते अ़म्मार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ख़ुदा परस्ती की वज्ह से सताए जाते थे और कुफ़्फ़ार उन्हें सख़्त ईज़ाएं पहुंचाते थे। और एक क़ौल येह है कि येह आयतें ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ग़ुलाम ह़ज़रते मिहजअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह के ह़क़ में नाज़िल हुई जो बद्र में सब से पहले शहीद होने वाले हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन की निस्बत फ़रमाया कि मिहजअ़ सय्यिदुश्शुहदा हैं और इस उम्मत में बाबे जन्नत की त़रफ़ पहले वोह पुकारे जाएंगे। इन के वालिदैन और इन की बीबी को इन का बहुत सदमा हुवा तो अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल की फिर उन की तसल्ली फ़रमाई। 3 : त़रह़ त़रह़ की आज़्माइशों में डाला, बा'ज़ उन में से वोह हैं जो आरे से चीर डाले गए, बा'ज़ लोहे की कंघियों से पुर्ज़े पुर्ज़े किये गए और मक़ामे सिद्क़ो वफ़ा में साबित व क़ाइम रहे। 4 : हर एक का ह़ाल ज़ाहिर फ़रमा देगा। 5 : शिर्क व मआ़सी में मुब्तला हैं 6 : और हम उन से इन्तिक़ाम न लेंगे। 7 : बअ़्स व हिसाब से डरे या सवाब की उम्मीद रखे।